गालो समाज में बच्चों के जन्म संबंधी मान्यताएँ

दोगे डम्मदिर

स्त्री का माँ बनना उसका प्रकृतिजन्य उपहार है। हर स्त्री माँ बनने के दौरान प्रसव पीड़ा से गुजरती है। गालो समाज में एक गर्भवती स्त्री को प्रसव पीड़ा के कारण चीखना-चिल्लाना अशुभ माना जाता है। इस बात की भी पाबंदी लगायी जाती है कि गर्भवती स्त्री अपनी पीड़ा के बारे में किसी से न कहे। ऐसा माना जाता है कि अगर कोई गर्भवती अपने प्रसव पीड़ा के बारे में किसी और से कहती है तो बच्चे का जन्म जल्द नहीं होगा। यह भी माना जाता है कि ऐसा करने से बच्चे पर बुरा असर भी पड़ सकता है और बच्चे की मृत्यु भी हो सकती है। इसलिए बच्चे के जन्म के वक्त गर्भवती स्त्री को खासतौर से पीड़ा के कारण आवाज़ न निकालने की हिदायत दी जाती है। कहा जाता है कि आवाज़ निकालने में ही सारी ऊर्जा निकल जायेगी और बच्चे के जन्म में तकलीफ हो सकती है।

बच्चे के जन्म संबंधी मान्यताएं:

बच्चे को जन्म देते वक्त माता को लेटने से मना किया जाता है। यह बिल्कुल डॉक्टरों की हिदायत के विपरीत है। गालो समाज के नियमानुसार कहा गया है कि बच्चे के जन्म के समय घुटनों के बल पर बैठना चाहिए। सही मायने में अगर देखा जाए तो यह बात बिल्कुल गलत और असुरक्षित है। गालो समाज के घरों को हिस्सों में बांटा गया है। घर के कई हिस्से मात्र पुरुषों के लिए होते हैं। वहां स्त्रियों का आना वर्जित होता है। इसी तरह गालो समाज में बच्चे को जन्म देने लिए भी निर्धारित जगह होती है। यह जगह मर्दों के हिस्से वाली जगह से और उसके पास के चूल्हे से दूर होती है। मर्दों की जगह के पास वाले चूल्हे को 'पिन्टे' अर्थात बड़ा चूल्हा और स्त्रियों के जगह के पास वाले चूल्हे को 'पिम्मे' अर्थात छोटा चूल्हा कहते हैं। सामान्यत: पिन्टे मुख्य चूल्हा होता है। इस चूल्हे में हमेशा आग जलाई जाती है और घर वालों के लिए खाना भी इसी में पकाया जाता है। पिम्मे का प्रयोग सामान्यत: कम होता है। इसका प्रयोग तब किया जाता है, जब घर में कोई बड़ा जश्न, पूजा आदि होता है या जब कभी शराब, 'ओपो' बनाई जाती है।

पिम्मे के आस-पास की जो जगह है, उसे स्त्रियों का स्थान माना जाता है और मर्द इस जगह कम ही आते हैं। बच्चे को जन्म देने के लिए यही जगह निर्धारित है। माँ जब बच्चे को जन्म देती है तो उसके आस-पास की सारी स्त्रियाँ जोर-जोर से बच्चों को अपना कहने लगती हैं। इसके पीछे एक अजीब-सा विश्वास है। ऐसा विश्वास है कि कहीं आस-पास भटकती कोई दुष्ट आत्मा नवजात शिशु पर अपना अधिकार न कर ले इसलिए उससे पहले आस-पास के लोगों को बच्चे पर अपना अधिकार कर लेना चाहिए। जन्म होने के साथ-साथ एक अस्थायी नाम भी दे दिया जाता है। कहा जाता है कि अगर कोई दुष्ट आत्मा बच्चे पर अपना अधिकार कर लेती है तो बच्चे का जीवन कष्टों से भरा होता है। इन सबके बाद तुरंत बच्चे के शरीर को ध्यान से परखा जाता है। यह इसलिए किया जाता है कि कहीं बच्चे के शरीर का कोई अंग अधूरा या ज्यादा तो नहीं। सब कुछ ठीक-ठाक होने पर बच्चे के कमर और पैरों में काला धागा बांध दिया जाता है जिससे कि उसे नज़र न लगे। नज़र लगने से बचाने का यह उपाय अक्सर भारतीय संस्कृति में देखा जाता है। बच्चा ठीक-ठाक है तो कोई बात नहीं लेकिन अगर बच्चे में कोई भी असाधारण बात, जैसे–उसका कोई अंग अपूर्ण या ज्यादा है तो यह बच्चे और

साथ ही उसकी माता के लिए बहुत ही दु:ख की बात होती है। दु:ख की बात इसलिए है, क्योंकि बच्चे के असामान्य होने की भनक पाते ही सारे लोग उस जगह से बिना कुछ कहे चुपचाप चले जाते हैं। ऐसा इसलिए, क्योंकि गालो समाज में इसे अशुभ माना जाता है। यह बहुत ही बुरी बात मानी जाती है। उन्हें लगता है कि अगर ज्यादा देर तक वे वहाँ रहें तो इसका उनके परिवार वालों पर बुरा असर पड़ सकता है। बच्चों के असामान्य होने के कारण समाज उस परिवार से परहेज भी करता है। इस परिवार के लोग धार्मिक त्योहारों, पूजा आदि में एक निर्धारित समय तक भाग नहीं लेते।

बच्चे के जन्म होने की खुशी सभी परिवार वाले मिलकर मनाते हैं। इस खुशी में स्त्रियाँ ही अधिकतर भाग लेती थी। लेकिन आजकल मर्द भी इस अवसर पर शामिल होने लगे हैं। गालो समाज में यह परंपरा है कि नवजात शिशु की नाभि खुद सूखकर जब तक गिर न जाए तब तक माता और बच्चा दोनों का घर के मर्दो वाली जगह में उठना बैठना मना होता है। घर में खासतौर से नई माता के लिए अलग से अपनी थाली, गिलास और कटोरी होती है। कभी ऐसा भी होता है कि माता का खाना एक खास पत्ते पर जिसे गालो में 'एक्कम' कहते हैं, उसमें भी परोसा जाता है।

अक्सर देखा जाता है कि नई नई माँ बनी स्त्री का खूब ख़याल रखा जाता है, लेकिन गालो समाज में ऐसा नहीं है। माता जितनी जल्दी अपने काम में लग जाए उसके लिए ठीक है वरना उसे कई प्रकार के ताने सुनने पड़ते हैं। एक हफ्ते में बच्चे की नाभि सूखकर गिर जाती है। इस समाज में ऐसी मान्यता है कि अलग-अलग वंश के बच्चों की नाभि के सूखकर गिरने की अवधि अलग-अलग होती है। उदाहरणत: 'एते' वंश के बच्चों की नाभि 5-6 दिनों में गिर जाती है और 'पादू' वंश के बच्चों की नाभि को गिरने में कम से कम एक सप्ताह का समय लग जाता है। गालो समाज में अगर कोई स्त्री पहली बार माँ बनती है तो सामान्यत: स्त्री की कोई अपनी बहन बच्चे की देखभाल करती है। बच्चे पर बुरी नज़र न पड़े इस कारण बच्चे और उसकी देखभाल करने वाले दोनों के बालों में मुर्गी के पंख मंत्रोच्चारण के पश्चात लगाया जाता है। इस रस्म के लिए अधिकतर श्वेत मुर्गी के पंखों का इस्तेमाल किया जाता है। इस खास अवसर को गालो भाषा में 'आओ लायाप' कहते हैं। इस रस्म के तहत नवजात शिशु का परिवार में सदस्य के रूप में स्वागत किया जाता है। इस अवसर पर खास पकवान बनाये जाते हैं, जैसे –'आमिन ताके', शराब आदि। हिंदू परंपरा में जैसे दही और खीर को शुभ माना जाता है, ठीक उसी प्रकार गालो समाज में आमिन ताके को शुभ माना जाता है और खास अवसरों पर ही इसे पकाया जाता है। इस पकवान के लिए चावल के छोटे-छोटे दाने (आमिन), अदरक (ताके) और मुर्गी के माँस को एक साथ पकाया जाता है। इस शुभ अवसर पर बच्चे का नामकरण भी होता है। गालो में नामकरण संबंधी बातें बहुत खास और महत्त्वपूर्ण होती हैं। बच्चों के नामकरण के तीन आधार हैं –

(क) पिता के नाम के आधार पर (यह मुख्य आधार है)

(ख) बुआ के नाम के आधार पर

(ग) चाचा के नाम के आधार पर

(क) पिता के नाम के आधार पर नामकरण:-

जैसा कि, हर समाज में होता है कि पिता का नाम बच्चों के लिए काफी अहमियत रखता है। गालो समाज की भी यही मान्यता है। पिता के नाम के आधार पर बच्चों का नामकरण खास बातों को ध्यान में रखकर किया जाता है। इसे दो भागों में बाँटकर हम देख सकते हैं :

(1) अंतिम अक्षर से

(2) अंतिम दो अक्षरों से

अंतिम अक्षर से :

इसमें पिता के नाम के अंतिम अक्षर को ध्यान में रखकर बच्चे का नामकरण किया जाता है। जैसे-

तुमतो (TUMTO)	तोली (TOLI)
(पिता का नाम)	(बेटे का नाम)

अंतिम दो अक्षरों से:

पिता के नाम के अंतिम दो अक्षरों को आधार बनाकर बच्चे का नामकरण होता है, जैसे –

पोजुम (POJUM)	जुमपी (JUMPI)
(पिता का नाम)	(बेटी का नाम)

पिता के नाम के आधार पर जो नामकरण होता है, इसे अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इस आधार को अपनाकर बच्चों के पिता से लेकर उसकी पूरी वंशावली का पता चल जाता है। गालो में वंशावली की गिनती धरती माँ (आनअ हिसी) के नाम से भी जोड़कर की जाती है।

(ख) बुआ के नाम के आधार पर नामकरण:

चूँकि इस समाज में लिंग भेद नहीं के बराबर है, इसलिए गालो समाज में बच्चे का नामकरण बच्चों की बुआ के नाम के आधार पर भी किया जाता है। इस प्रकार के नामकरण में एक कमी यह है कि इससे बच्चे के दादा, परदादा आदि के नामों का तो पता चल जाता है, लेकिन उसके पिता का नहीं, जैसे –

तुम्बोम (Tumbom)	बोमतुम (Bomtum)	तुम्पी (Tumpi)	पीजुम (Pijum)
(परदादा का नाम)	(दादा का नाम)	(बुआ का नाम)	(बच्चे का नाम)

बच्चे के पिता का नाम है –तुमतो। इस तरह से हम देख सकते है कि इस नामकरण से दादा, परदादा आदि के नामों का तो पता चलता है, लेकिन पिता का नाम छिप जाता है।

(ग) चाचा के नाम के आधार पर नामकरण

बुआ के नाम के आधार पर नामकरण करने में जो खामियाँ हैं, वही इस आधार के नामकरण में भी है। इस आधार के नामकरण में भी बच्चे के पिता का नाम छिप जाता है।

गालो समाज में नामकरण संबंधी अपनायी जाने वाली इस पद्धति को बहुत महत्त्वपूर्ण और सराहा जाता है। गालो जनजाति की यह एक खासियत है, क्योंकि इस पद्धति से पूरी वंशावली का पता चल जाता है।

बच्चे का नामकरण इस समाज में गंभीरता का विषय प्रतीत होता है। इसलिए इस समाज में नामकरण के संबंध में बारीकी से विचार किया जाता है और फिर नाम रखा जाता है। नामकरण के लिए एक खास किस्म के पौधे की सूखी डंठलों का इस्तेमाल किया जाता है। यह पौधा घने और सुदूर जंगलों में मिलता है। कहा गया है कि यह पौधा बांस की प्रजाति है। सामान्यत: डंठलों को पहले से ही घर में सुरक्षित स्थान पर सुखाकर रखा जाता है और आवश्यकता पड़ने पर इसे निकाला जाता है। नामकरण की रस्म के लिए इन सूखी डंठलों को पतले-पतले भागों में चीर दिया जाता है। इसकी लंबाई और चौड़ाई अगरबत्ती के समान होती है। इन्हें घर के मुख्य चूल्हे अर्थात 'पिन्टे' के पास ले जाते हैं, जहां पहले से आग जली हुई होती है। नामकरण के शुभ अवसर पर आए सभी लोग इस चूल्हे के आस-पास इकट्ठा होते हैं। इस अवसर पर आए सभी लोगों में सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति वह होता है जो नामकरण संबंधी सारी विधियों का संचालन करता है। नामकरण की प्रक्रिया आरंभ होती है। बच्चे के लिए इस प्रकार पाँच-छह नामों का विकल्प दिया जाता है। इनमें से कुछ नाम चुन लिए जाते हैं और प्रत्येक नाम का प्रतिनिधित्व करती एक छड़ी चूल्हे के पास जलाकर गाड़ दी जाती है। छड़ी जलती रहती है और उसके जलकर बुझ जाने का सभी बेसब्री से इंतजार करते हैं। इस बीच जलती छड़ी को बिल्कुल भी हिलाया-डुलाया नहीं जाता है। अन्य लकड़ी की छड़ियों की तुलना में इस छड़ी के जलने पर जो राख निकलती है वह सामान्य लकड़ी की राख से ज्यादा देर तक एक घुमावदार चक्र बनकर शेष रहती है। जिस छड़ी के जलने के पश्चात घुमावदार राख का ढेर देर तक रहता है उसी को सबसे अच्छा माना जाता है और जिस नाम के प्रतिनिधि के रूप में उसे जलाया और गाड़ा जाता है, वह नाम बच्चे के लिए सबसे शुभ माना जाता है। अत: बच्चे का वही नाम रखा जाता है। गालो समाज में बच्चे के नामकरण संबंधी बातों को काफी गंभीरता से लिया जाता है। यही कारण है कि अगर माता-पिता या संबंधियों को लगे कि बच्चे का नामकरण गलत हो गया है तो बच्चे का नाम बदला भी जाता है। गलत नामकरण और बच्चे के पुन: नामकरण संबंधी कुछ बातें इस प्रकार हैं –

गलत नामकरण संबंधी कुछ बातें:

बच्चे के नामकरण के बाद अगर बच्चे का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, बच्चा ठीक से खाता-पीता नहीं है या बच्चा जरूरत से ज्यादा रोता है तो ऐसा माना जाता है कि यह गलत नामकरण के कारण ही हो रहा है। घर वालों को लगता है कि बच्चे के नामकरण के वक्त उनसे कोई न कोई गलती अवश्य हो गयी होगी। यह गलती घुमावदार राख के चक्र को परखने में भी हो सकती है। ऐसे में, अपनी गलती सुधारने के लिए और बच्चे के हित के लिए फिर से बच्चे का नामकरण होता है।

गालो समाज में बच्चे के जन्म और उसकी शारीरिक बनावट के आधार पर भी कई नियमों का पालन किया जाता है। गालो समाज में जुड़वा बच्चे के जन्म होने को और मृत शिशु के जन्म होने को बहुत ही अशुभ माना जाता था। इस कारण माता-पिता और उसके घर वालों को कुछ निर्धारित नियमावधि तक कुछ पाबंदियों में रहना पड़ता है। वे पूर्ण रूप से समाज के कुछ अवसरों में भाग नहीं ले सकते थे और कुछ चीजों का सेवन भी नहीं कर सकते थे। उनके आवागमन में भी रोक-टोक रहती थी। इस संबंध में कुछ बातें इस प्रकार हैं –

जुड़वा बच्चे का जन्म होने पर-

गालो समाज में जुड़वा बच्चे के जन्म को बहुत ही अशुभ माना जाता है। लेकिन बदलते वक्त के साथ अशुभ माने जाने वाली सोच भी लगभग खत्म हो गई है। जुड़वा बच्चे के जन्म होने पर कभी-कभी अपने परिवार वाले भी साथ रहने से परहेज करते थे। ऐसी माता को इस समाज में कई पाबंदियों का सामना करना पड़ता था। ऐसी माता के घर में स्त्रियाँ कदम रखने से कतराती थी। उन्हें यह बताया जाता था कि ऐसी जगहों पर जाने पर उनको भी भविष्य में जुड़वा बच्चे हो सकते हैं। यह भी कहा जाता है कि ऐसे बच्चों का जीवन खुशहाल नहीं

होता है या जुड़वा बच्चों में से केवल एक ही बच्चा जीवित रहता है। इस पर भी अगर बच्चों का लिंग समान है तो उनके जिंदा रहने की आशा है, लेकिन अगर लिंग में अंतर है तो उनके जिंदा रहने पर शंका की जाती है।

जुड़वा बच्चों के माँ से लोग चीजों का लेन-देन नहीं करते। खास तौर से सूत और अदरक के लेन-देन से माता पर काफी पाबंदियाँ होती हैं। जैसे- माता को गाँव के नल में नहाने से मनाही होती है। वहाँ वह कपड़े भी नहीं धो सकती। इन रोक-टोक से बचने के लिए कभी-कभी घर की लड़कियाँ कुछ दिनों के लिए अपने रिश्तेदारों के यहाँ रहने के लिए चली जाती हैं। यह सारी बातें शारीरिक तौर पर अपूर्ण बच्चे के जन्म होने पर भी, बच्चे और माँ दोनों पर लागू होती हैं।

गालो में मृत शिशु के जन्म को भी बहुत अशुभ माना जाता है। ऐसे शिशुओं का अंतिम संस्कार भी बहुत ही असाधारण तरीके से किया जाता था। विशेष प्रकार के लौकी के सूखे और खोखले खोल में डालकर दूर जंगल में गुप्त तरीके से रख दिया जाता था। इस कार्य के लिए कभी-कभी बाँस के चोंगे का भी प्रयोग किया जाता था। मृत बच्चे के जन्म को पाप के रूप में देखा जाता था और शुद्धिकरण के लिए, एक पूजा जिसे गालो भाषा में 'मोदोर' कहते हैं, का आयोजन किया जाता था। इस पूजा के बाद ही बच्चे की माता और उसके घर वालों को समाज में फिर से सामान्य रूप से स्वीकारा जाता रहा है।

गालो समाज में बच्चे के जन्म, नामकरण, मृत्यु आदि विशेष स्थितियों में बच्चे और माता के साथ जो होता है, इस संदर्भ में यह एक संक्षिप्त जानकारी है। इसके अलावा भी कई मान्यताएँ हैं। जैसे- बच्चे को उपहार दिए बिना अगर उसकी मौसी उसे अपने गोद में ले लेती है तो बच्चे का पेट खराब हो जाता है। बच्चे के जन्म संबंधी यह सारी बातें हालांकि खोखली और हास्यास्पद लगती हैं, लेकिन गालो समाज में इन बातों को काफी मान्यता दी जाती थी। बदलते समाज के साथ-साथ इन नियमों और परंपराओं में कुछ बदलाव तो आ गए हैं, लेकिन इन्हें पूर्णत: त्यागा नहीं गया है। और चाहे परंपराएँ कितनी भी खोखली क्यों न लगे, यही हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं, हमारी पहचान हैं। इनमें कतिपय सुधार कर स्वीकार करने में कोई असुविधा नहीं है।

*(**लेखकीय परिचय :** डॉ. दोगे डमदिर दोञ्यी-पोलो शासकीय महाविद्यालय,कामकी, वेस्ट सियाङ, अरुणाचल प्रदेश के हिंदी विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं। मोबा: 8794163810/9436238700, ई-मेल : dogengomdir66842@gmail.com)*